सहायक वाचन

कक्षा 3

सत्रः 2026-27

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय संपत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

निःशुल्क वितरण हेतु

समय दर्शन प्रिंटर एंड पब्लिशर्स, ग्राम छाटा, तहसील पाटन, दुर्ग

''छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम'' द्वारा प्रदायित आंतरिक पृष्ठ 70 जीएसएम वॉटरमार्कड रील मैपलिथो पेपर कॉनफॉर्मिंग टू बीआईएस स्पेशीफिकेशन 1848 (पार्ट–1):2018 विथ लेटेस्ट अमेडमेंट, इन साईज 84 सेमी विड्थ रील तथा कव्हर पृष्ठ 220 जीएसएम एमजी कव्हर पेपर कॉनफॉर्मिंग टू बीआईएस स्पेशीफिकेशन आईएस 6956:2001 (रिफर्मड 2017) विथ वन साईड ग्लेज्ड (शाईन) एंड लेटेस्ट अमेडमेंट्स इन शीट साईज 61cm x 86.5cm पर मुद्रित किया गया है।

मुद्रित पुस्तकों की संख्या : 4,46,605

प्रेरणास्रोत
डॉ. कमलप्रीत सिंह (भा.प्र.से.)
सचिव, स्कूल शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़

मार्गदर्शक
ऋतुराज रघुवंशी (भा.प्र.से.)

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छ.ग., रायपुर

सलाहकार

जे.पी. रथ
अतिरिक्त संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छ.ग., रायपुर

के. कुमार
संयुक्त संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छ.ग., रायपुर

समन्वयक
कौस्तभ चटर्जी (सहायक संचालक)
डॉ.डी.के.बोदले (से.नि.सहायक प्राध्यापक)

विषयवस्तु चयन तथा संपादन
डॉ. चितरंजन कर, श्री बलदाऊ राम साहू

विषय विशेषज्ञ
श्री राजेन्द्र कुमार साहू , श्री गौरी शंकर कटकवार, श्रीमती तृप्ता जोशी

लेखन समूह
श्री विनय शरण सिंह, श्री श्याम नारायण श्रीवास्तव , श्री सीताराम साहू,
श्री पोखन लाल जायसवाल, श्री द्रोण साहू, श्रीमती मल्लिका रुद्रा,
श्रीमती प्रिया जोशी, श्रीमती रजनी शर्मा

टंकण
कु. ईशा श्रीवास्तव

आवरण, पृष्ठांकन एवं लेआऊट डिजाईन
हिमांशु वर्मा, सुधीर कुमार वैष्णव

आमुख

छत्तीसगढ़ स्कूली शिक्षा में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की पुस्तकों को अनुकूलित कर बच्चों को राष्ट्रीय स्तर के समतुल्य लाने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि राज्य के बच्चे किसी भी स्तर पर कमतर न रहें। साथ ही वे राज्य के पर्व-परंपराओं और कला- संस्कृति से भी परिचित हो सकें। इस उद्देश्य से छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग ने कक्षा 3 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए सहायक-वाचन निर्माण करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक के माध्यम से वाचन के प्रमुख उद्देश्य, जैसे- पठन में रुचि का विकास, अर्थ ग्रहण करने की क्षमता, अभिव्यक्ति कौशल का संवर्धन, कल्पनाशीलता एवं चिंतन शक्ति का विकास करना है, जिससे बच्चे स्वतः स्फूर्त पठन एवं वाचन की ओर प्रेरित हों सकें और उनमें स्वतंत्र रूप से सीखने की प्रवृत्ति विकसित हो सके।

यह पुस्तक पाठ्यपुस्तक से इतर है। इस पुस्तक में रोचक कहानियों, कविताओं एवं महापुरुषों की जीवनियों के साथ साथ स्थानीय इतिहास, कला-संस्कृति, तीज -त्यौहार, पर्व-परंपराओं आदि की जानकारियां दी गई हैं। प्रायः ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पढ़ने के लिए पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध नहीं होती, इस कारण वे बहुत-सी जरुरी जानकारियाँ प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं।

आज शिक्षा के परिदृश्य में आमूल-चूल परिवर्तन आया है। अब बच्चे स्थानीय न होकर वैश्विक हो गए हैं। ज्ञान बढ़ा है तो प्रतिस्पर्धा भी बढ़ी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 बाल-केंद्रित शिक्षा, अनुभव आधारित शिक्षा एवं समृद्ध भाषाई शिक्षा पर विशेष बल देती है। इसलिए इस पुस्तक को तैयार करने में बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया गया है, ताकि बच्चे केवल पढ़ना ही न सीखें, बल्कि पढ़कर समझें, सोचें और तथ्यों को अपने अनुभवों से जोड़ सकें।

हम जानते हैं कि भारत का अपना गौरवशाली और समृद्ध इतिहास रहा है। इस समृद्ध इतिहास के साथ-साथ वे राज्य के स्थानीय कला-संस्कृति, इतिहास और लोक-जीवन को जानें और उस पर गर्व कर सकें। यह इस पुस्तक का व्यापक उद्देश्य है।

यह पुस्तक प्रायोगिक संस्करण के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। इस संदर्भ में विद्यार्थियों, शिक्षकों , पालकों एवं शिक्षाविदों से विनम्र अपेक्षा है कि वे हमें अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान करें, ताकि आगामी समय में इस पुस्तक को और अधिक उपयोगी, प्रभावी एवं छात्र केंद्रित बनाया जा सके।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक शिक्षकों के लिए शिक्षण को अधिक प्रभावी एवं रोचक बनाने में उपयोगी सिद्ध होगी तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए पुस्तक निर्माण से जुड़े सभी शिक्षाविदों, विशेषज्ञों, लेखकों एवं सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण,
रायपुर छत्तीसगढ़

शिक्षकों के लिए निर्देश

छत्तीसगढ़ शासन की विशिष्ट सोच के अनुरूप कक्षा तीसरी से आठवीं तक के विद्यार्थियों के लिए सहायक वाचन पुस्तक का निर्माण राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के द्वारा किया गया है। इस पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों में पठन के प्रति रुचि विकसित करना, स्वतः स्फूर्त वाचन की आदत डालना तथा उनकी भाषा, चिंतन क्षमता का विकास करना तथा छत्तीसगढ़ के सामाजिक परिवेश से परिचित कराना है। अतः राज्य के विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों से अपेक्षा की जाती हैं कि वे शासन की मंशा के अनुरूप सहायक वाचन पुस्तक के प्रभावी उपयोग से बच्चों में अपेक्षित दक्षताओं का विकास के लिए आनंदमय वातावरण निर्मित करें।

शिक्षकों से निम्नलिखित बिंदुओं के अनुसार शिक्षण कार्य करने की अपेक्षा की जाती है—

1. सहायक वाचन को परीक्षा की दृष्टिकोण से प्रस्तुत न करें।बल्कि कक्षा में सहज, रोचक एवं सहभागितापूर्ण वातावरण बनाएँ, ताकि बच्चे इसे उत्साहपूर्वक पढ़ने के लिए तैयार रहे।

2. विद्यार्थियों को स्वयं पढ़ने, समझने एवं अपने शब्दों में अभिव्यक्त करने का अवसर दें।

3. बच्चों से क्रमशः सस्वर वाचन, समूह वाचन तथा मौन वाचन करवाएँ, जिससे स्पष्ट उच्चारण एवं अर्थग्रहण की क्षमता का विकास हो सके।

4. पाठों को बच्चों के परिवेश, स्थानीय संस्कृति, तीज-त्यौहार एवं दैनिक जीवन से जोड़कर समझाएँ, ताकि वे विषयवस्तु को सहज रूप से आत्मसात कर सकें। छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति, महापुरुषों, ऐतिहासिक स्थलों और जैव-विविधता पर चर्चा कर समझ विकसित करें। यदि पाठ किसी विशेष जिले या त्यौहार (जैसे: हरेली, तीजा) पर आधारित है, तो बच्चों को उनके व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

5. पाठ पढ़ाने के बाद बच्चों से प्रश्न पूछें, उनके विचार सुनें तथा चर्चा कराएँ। इससे उनमें आत्मविश्वास एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।

6. कक्षा में कहानी कथन, चित्रांकन, भूमिका निर्वहन, कविता वाचन, समूह चर्चा

एवं लेखन जैसी गतिविधियों के माध्यम से सीखने को रोचक बनाएँ।

7. पाठों में निहित मानवीय संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक सरोकारों को बच्चों के जीवन से जोड़कर समझाएँ।

8. बच्चों को नियमित रूप से पुस्तक पढ़ने हेतु अतिरिक्त पठन सामग्री के उपयोग के लिए प्रेरित करें।

9. कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को पढ़ने एवं बोलने का अवसर दें। धीमी गति से सीखने वाले एवं संकोची बच्चों पर विशेष ध्यान देवें।

10.महापुरुषों या लोक कथाओं पर आधारित पाठों का कक्षा में मंचन करवाएँ।

11. बच्चों को छत्तीसगढ़ के पारंपरिक खान-पान, खेलकूद, आभूषण, तीज-त्योहार या औजारों के बारे में जानकारी एकत्र करने हेतु प्रोजेक्ट कार्य दें।

13. सहायक वाचन का मूल्यांकन पारंपरिक रटने वाली पद्धति से नहीं होना चाहिए। बल्कि मूल्यांकन के लिए खुले प्रश्न पूछें, जैसे: "यदि आप उस जगह होते तो क्या करते?" या "आपको इस कहानी का कौन सा पात्र सबसे अच्छा लगा और क्यों?" आदि।

टीप- यह पुस्तक एक प्रायोगिक संस्करण है। अतः शिक्षकगण अपने अनुभव एवं सुझाव साझा करें, ताकि भविष्य में पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाया जा सके।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण,
रायपुर छत्तीसगढ़

राज्य शिक्षा स्थायी समिति, छत्तीसगढ़

नाम	पद नाम
1. श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति, गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर	- अध्यक्ष
2. संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर	- सदस्य सचिव
3. संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़	- सदस्य
4. मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़	- सदस्य
5. डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर	- सदस्य
6. डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर	- सदस्य
7. श्री मनीष देवांगन, वि.खं. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसींवा, जिला-रायपुर	- सदस्य
8.श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी, खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम	- सदस्य
9. श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर	- सदस्य
10. श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर	- सदस्य

अनुक्रमणिका

पाठ सामग्री		पृष्ठ क्रमांक
1. ऊपर वाले दो वरदान (कविता)	गिरीश पंकज	1
2. राजकुमार राम (कहानी)	लेखक मंडल	2
3. पर्यटन स्थल - शिवरीनारायण (निबंध)	लेखक मंडल	4
4. बैर भाव का फल (कहानी)	लेखक मंडल	6
5. मैंने भी पूछा (कविता)	रमेशचन्द्र शाह	8
6. राजा को मिली सीख (कहानी)	लेखक मंडल	9
7. छत्तीसगढ़ का लोक पर्व - हरेली (निबंध)	लेखक मंडल	11
8. पढ़ना मतलब बढ़ना (कविता)	लेखक मंडल	12
9. हँसी-खेल में प्राण गंवाए (चित्र कथा)	लेखक मंडल	13
10. ताल-तलैया बड़े काम के (कहानी)	लेखक मंडल	15
11. साथ निभाते दादा जी (कविता)	संतोष कुमार सिंह	17
12. एक अनोखा तीर्थ - बानबरद (निबंध)	लेखक मंडल	19
13. तरकीब काम आई (कविता)	लेखक मंडल	20
14. फुगड़ी (निबंध)	लेखक मंडल	21
15. सच्चरित्र जवान – चंद्रशेखर (कहानी)	लेखक मंडल	23
16. नींव के पत्थर	लेखक मंडल	24
17. गौरैया (कविता)	लेखक मंडल	25
18. शबरी के बेर	लेखक मंडल	26

ऊपर वाले दो वरदान

ऊपर वाले दो वरदान,
खूब बढ़ाएँ अपना ज्ञान।
सबकी सेवा करके हम भी,
बन जाएँ सच्चे इंसान ॥

कभी न बोलें झूठ किसी से,
कभी किसी का दिल न दुखाएँ।
ऊँच-नीच की बात करें ना,
छुआ-छूत को दूर भगाएँ।

फैलाएँ दुनिया में हरदम,
मानवता का धर्म महान।
ऊपर वाले दो वरदान,
खूब बढ़ाएँ अपना ज्ञान ॥

राजकुमार राम

हम पृथ्वी पर रहने वाले मानव हैं। मानव जाति का इतिहास बहुत पुराना है। इसे चार युगों में बाँटा जाता है। 1. सतयुग 2. त्रेतायुग 3. द्वापरयुग 4. कलियुग। आजकल कलियुग है।

त्रेतायुग में एक राजा थे। उनका नाम दशरथ था। वे अयोध्या में रहते थे। उनकी तीन रानियाँ थी- कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी। उनके चार पुत्र थे। कौशल्या के पुत्र का नाम राम, कैकेयी के पुत्र भरत तथा सुमित्रा के दो पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न थे।

चारों भाइयों में राम सबसे बड़े थे। वे अपने से बड़ों का आदर करते थे और छोटों को प्यार। राम के साथ लक्ष्मण की तथा भरत के साथ शत्रुघ्न की जोड़ी प्रसिद्ध थी।

चारों भाई सूर्य के उदय होने के पूर्व ही जग कर सबसे पहले माता-पिता और गुरु वशिष्ठ जी को प्रणाम करते थे। फिर वे शरीर को बलिष्ठ बनाने के लिए सूर्य नमस्कार आदि व्यायाम करते थे। वे सरयू नदी में स्नान करके भगवान की पूजा करते और अच्छे-अच्छे ग्रंथों का अध्ययन करते थे।

चारों भाई प्रतिदिन घोड़ों पर सवार होकर जंगलों में जाते तथा वहाँ धनुष-बाण एवं तलवार आदि शस्त्र चलाने का अभ्यास करते थे।

राम में अनेक गुण थे, जैसे-दीन दुखियों पर दया करना, अपने से बड़ों का आदर करना, सदैव सत्य बोलना आदि। उनका स्वभाव बहुत ही मृदुल था, इसलिए अयोध्या नगर के निवासी उनको बहुत प्यार करते थे तथा उन्हें उदार शासक के रूप में देखते थे

भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न तीनों भाई राम की आज्ञा का पालन करते थे। वे भी राम के समान ही वीर, दयावान एवं सत्यवादी थे।

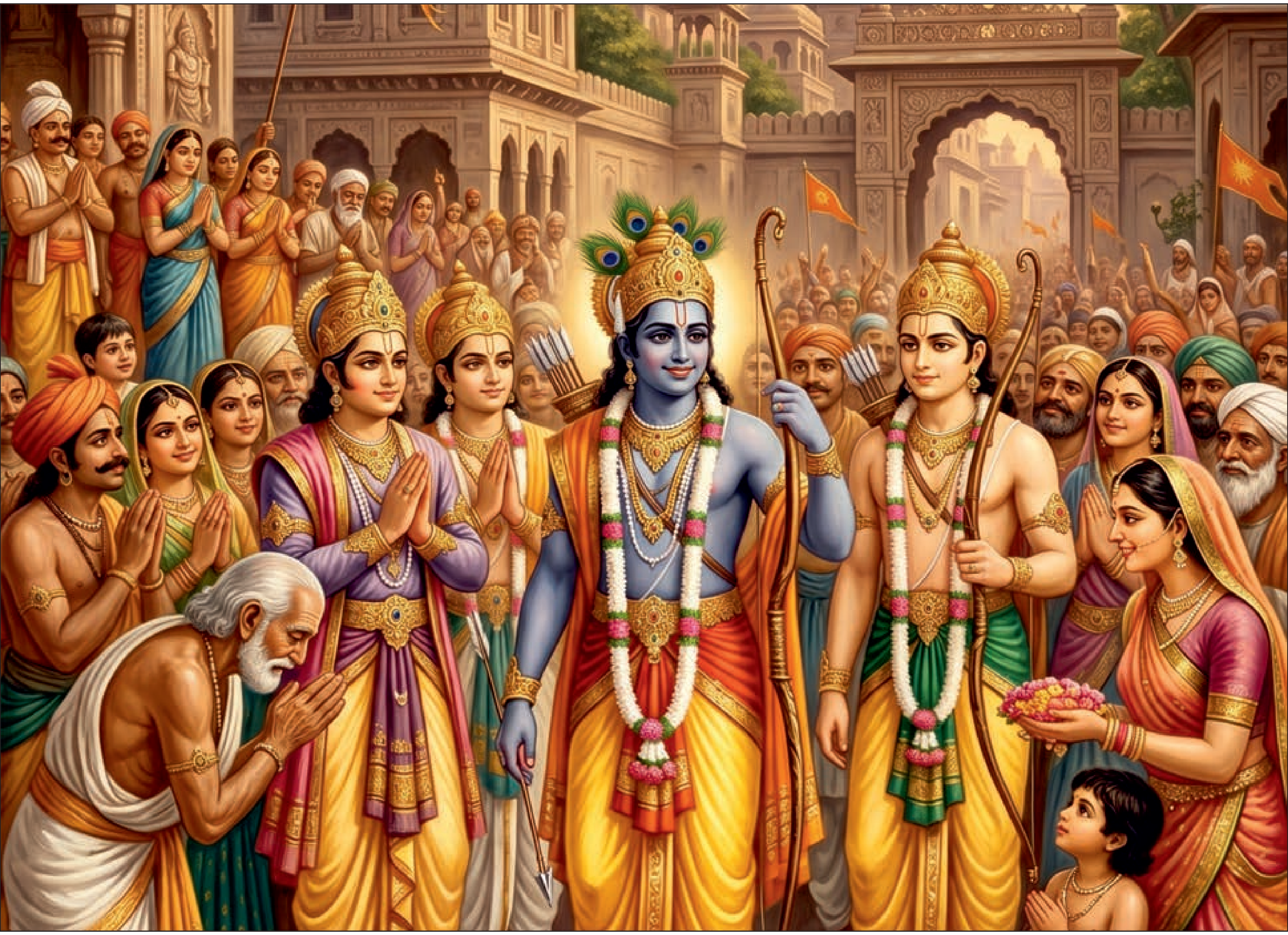

पर्यटन-स्थल- शिवरीनारायण

पात्र-परिचय

गोपाल - पहला पर्यटक

गणेश - दूसरा पर्यटक

दादा जी - स्थानीय बुजुर्ग

गोपाल – जय जोहार दादा जी !

दादा जी – जय जोहार बेटे !

गोपाल - दादा जी, बताइए, इस जगह बेटे इतनी भीड़ क्यों है ?

दादा जी – बेटे! यह कोई साधारण जगह नहीं है। यह देवभूमि है। इस स्थान को शिवरीनारायण कहते हैं। यह हमारे छत्तीसगढ़ की जगन्नाथपुरी है।

गणेश - अच्छा! यह तो बहुत ही पवित्र स्थल है! इसे जगन्नाथपुरी क्यों कहते है दादा जी?

दादा जी - मान्यता है कि प्राचीन समय से भगवान जगन्नाथ यहाँ विराजमान थे। आज भी भगवान यहाँ गुप्त रूप से निवास करते हैं। ऐसा हम सब का विश्वास है।

गोपाल - यह नगरी और किन बातों के लिए प्रसिद्ध है ?

दादा जी - यह महानदी (चित्रोत्पला) शिवनाथ और जोंक नदी का पवित्र संगम-स्थल है।

गणेश – (जिज्ञासा के साथ) कुछ और बताइए न दादा जी ?

दादा जी – कहा जाता है कि भगवान श्रीराम वनवास के समय माता सीता की खोज करते हुए भाई लक्ष्मण के साथ यहाँ पहुँचे थे। भगवान श्रीराम से माता शबरी की यही भेंट हुई थी। भगवान श्रीराम ने यहीं माता शबरी के जूठे बेर खाए थे। माता शबरी का प्रसिद्ध मंदिर यहीं है।

गोपाल – मुझे यह सब सुनकर बहुत अच्छा लग रहा है, कुछ और भी बताइए न दादा जी?

दादा जी - बताता हूँ, बताता हूँ । यहाँ रथ दूज (रथ द्वितीया) बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। यहाँ माघी पूर्णिमा से पंद्रह दिनों महाशिवरात्रि तक मेला लगता है। दूर-दूर से श्रद्धालु यहाँ आते हैं।

यहाँ से लगभग तीन किलोमीटर में प्राचीन नगरी खरौद है, जहाँ लक्ष्मणेश्वर मंदिर है । आगे लगभग सोलह किलोमीटर दूरी पर गिरौधपुरी धाम है, जो गुरु घासीदास बाबा की जन्म-स्थली है।

गोपाल और गणेश - धन्यवाद दादा जी! आज हमें शिवरीनारायण के संबंध में बहुत अच्छी जानकारी प्राप्त हुई।

बैर भाव का फल

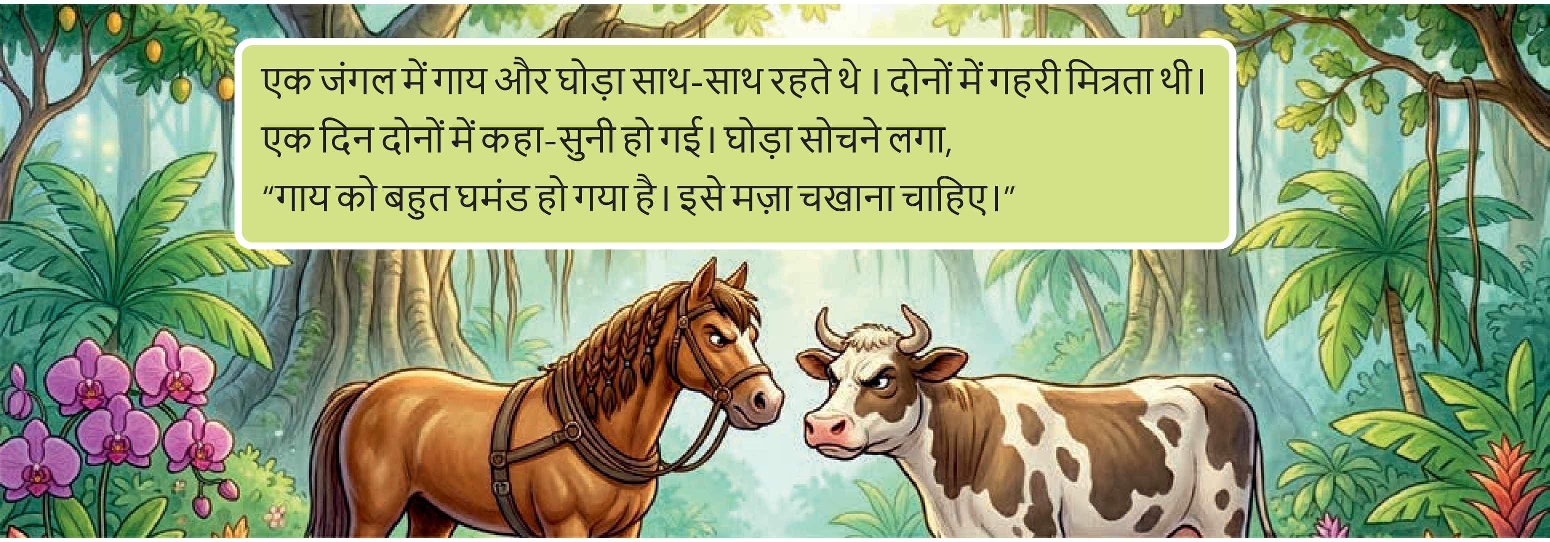

एक जंगल में गाय और घोड़ा साथ-साथ रहते थे। दोनों में गहरी मित्रता थी। एक दिन दोनों में कहा-सुनी हो गई। घोड़ा सोचने लगा,
"गाय को बहुत घमंड हो गया है। इसे मज़ा चखाना चाहिए।"

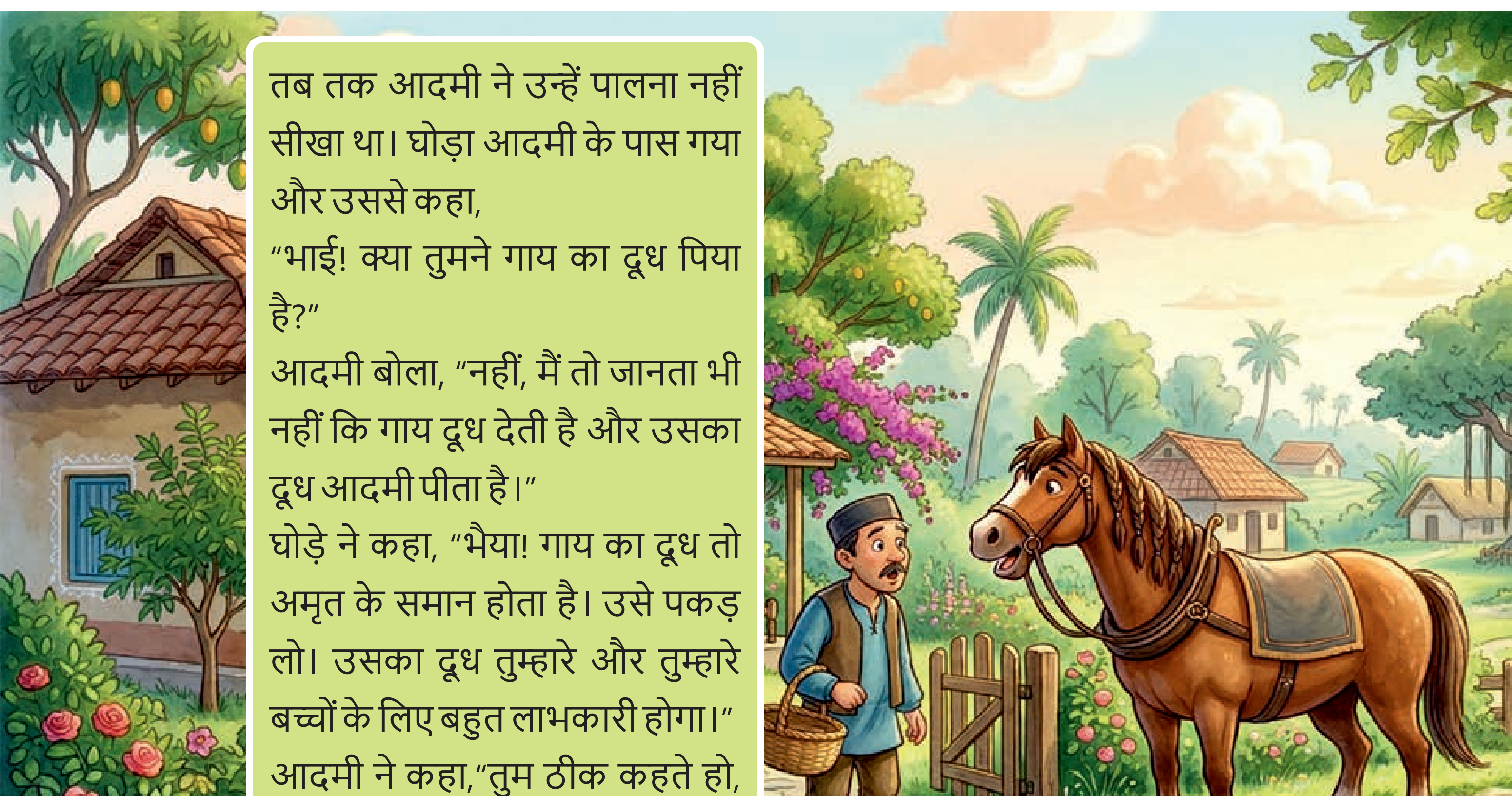

तब तक आदमी ने उन्हें पालना नहीं सीखा था। घोड़ा आदमी के पास गया और उससे कहा,
"भाई! क्या तुमने गाय का दूध पिया है?"
आदमी बोला, "नहीं, मैं तो जानता भी नहीं कि गाय दूध देती है और उसका दूध आदमी पीता है।"
घोड़े ने कहा, "भैया! गाय का दूध तो अमृत के समान होता है। उसे पकड़ लो। उसका दूध तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के लिए बहुत लाभकारी होगा।"
आदमी ने कहा,"तुम ठीक कहते हो, लेकिन मैं गाय को पकड़ूँगा कैसे? वह तो बहुत तेज दौड़ती है।"

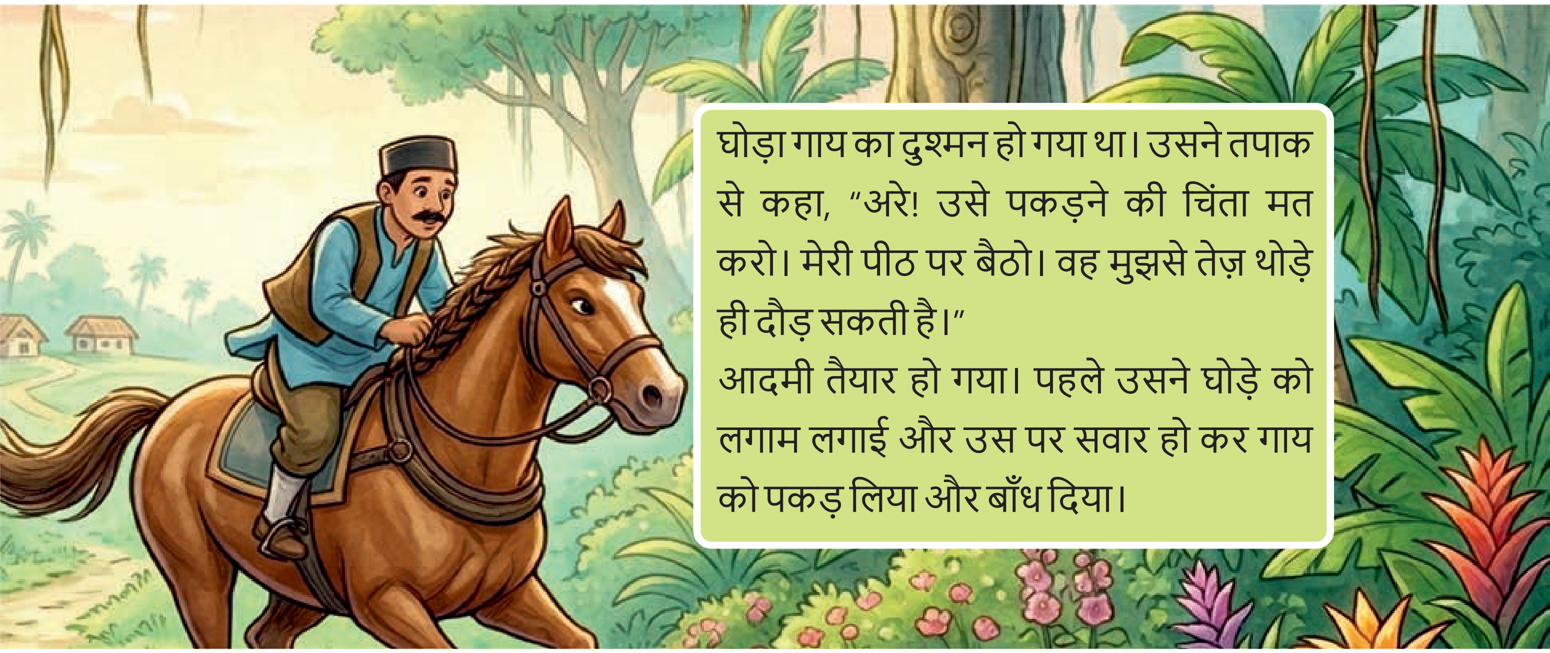

घोड़ा गाय का दुश्मन हो गया था। उसने तपाक से कहा, "अरे! उसे पकड़ने की चिंता मत करो। मेरी पीठ पर बैठो। वह मुझसे तेज़ थोड़े ही दौड़ सकती है।"

आदमी तैयार हो गया। पहले उसने घोड़े को लगाम लगाई और उस पर सवार हो कर गाय को पकड़ लिया और बाँध दिया।

उस दिन से गाय आदमी की पालतू बन गई। घोड़ा भी अपनी चालाकी के कारण स्वयं फँस गया और वह भी पालतू हो गया।

मैंने भी पूछा

पूछ रही मछली कछुए से, क्या लगते हो मेरे?
साँप पूछता है कछुए से, हाल- चाल क्या तेरे?

सूरज ने धरती से पूछा, लगा रही क्यों फेरा?
धरती ने सागर से पूछा, क्यों मुझको है घेरा?

लगे हाथ मैंने भी पूछा आसमान से जाकर।
ढूँढ रहे तुम किसको दादा, इतने दीप जलाकर?

राजा को मिली सीख

एक समय की बात है। एक राजा था। वह बहुत समझदार और दयालु था। वह अपने राज्य की भलाई के लिए हमेशा सोचता रहता था। राजा को यह आदत थी कि वह कोई भी काम करने से पहले सलाह ज़रूर लेता था।

एक दिन राजा अपने मंत्रियों और सेवकों के साथ जंगल की सैर पर निकला। जंगल बहुत शांत और सुंदर था। पेड़ों की छाया में उसे एक साधु दिखाई दिया । साधु बहुत शांत बैठे थे और उनके चेहरे पर तेज था।

राजा ने साधु को प्रणाम किया और कहा,

“महात्मा जी! मैं चाहता हूँ कि मेरा राज्य हमेशा खुशहाल रहे। कृपया इसके लिए मुझे कोई अच्छी सीख दीजिए।”

साधु ने धीरे से कहा,

“हे राजा, कोई भी काम करने से पहले उसके परिणाम के बारे में ज़रूर सोच लेना।”

राजा को यह बात बहुत साधारण लगी। उसने मन ही मन सोचा कि यह तो मैं पहले से जानता था, फिर भी उसने साधु का सम्मान करते हुए उन्हें पाँच हजार स्वर्ण मुद्राएँ दीं।

राजा वापस अपने महल आ गया। कुछ दिनों बाद राज्य में एक बड़ी योजना आई, जिसमें बहुत सारा धन खर्च होना था। सभी मंत्री उस योजना के पक्ष में थे।

राजा को साधु की बात याद आ गई। उसने सोचा,"अगर यह योजना असफल हो गई, तो राज्य को नुक़सान होगा।"

राजा ने योजना के बारे में ध्यान से सोचा और फिर उसे रद्द कर दिया।

कुछ समय बाद राजा को पता चला कि दूसरे राज्य में वही योजना लागू की गई थी और वहाँ भारी नुक़सान हुआ। तब राजा को समझ में आया कि साधु की साधारण-सी सीख कितनी काम की थी।

राजा फिर साधु के पास गया और कहा,

"महात्मा जी! आपकी बात ने मेरे राज्य को नुकसान से बचा लिया। अब मुझे समझ में आ गया है कि हर काम सोच-समझकर करना चाहिए।"

साधु मुस्कराए और बोले,

"हे राजा! जो व्यक्ति सोचकर काम करता है, वही सफल होता है।"

राजा ने उस दिन से यह नियम बना लिया कि वह बिना सोचे समझे कोई काम नहीं करेगा। इसी कारण उसका राज्य सुखी और समृद्ध बना रहा।

इसीलिए - गिरिधर कविराय ने कहा है-

बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछिताय ।
काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय ।

छत्तीसगढ़ का लोक-पर्व-हरेली

छत्तीसगढ़ में मनाए जाने वाले पर्वों में हरेली एक महत्त्वपूर्ण लोक-पर्व है। यह पर्व श्रावण मास की अमावस्या को मनाया जाता है। हरेली का अर्थ है- हरियाली। हरियाली प्रकृति के प्रति प्रेम और सम्मान का प्रतीक है। इस समय खेतों में हरी-हरी फसलें लहलहाने लगती हैं, इसलिए इस पर्व का नाम हरेली पड़ा।

हरेली-पर्व किसानों के लिए विशेष महत्त्व रखता है। इस दिन किसान सुबह-सुबह पहाटिया (चरवाहा) के घर से असगंद काँदा एवं जंगली जड़ी-बूटी से बनी औषधि अपने गाय-बैलों को खिलाते हैं। यह वर्षा ऋतु में होने वाली बीमारियों में रोग-प्रतिरोधक के रूप में कार्य करती है। किसान अपने हल, कुदाल, फावड़ा जैसे खेती के औजारों की साफ-सफाई करते हैं और उनकी पूजा करते हैं। इस दिन भोग में मीठा चीला चढ़ाने की परंपरा है। पहले बैलों को नहलाया जाता है, उनके सींगों पर पॉलिश या तेल लगा कर उनका शृंगार किया जाता है। इस तरह किसान अपने पशुओं और कृषि-औजारों के प्रति सम्मान का भाव प्रकट करते हैं।

हरेली केवल खेती का पर्व नहीं, बल्कि लोक आस्था और पारंपरिक चिकित्सा से भी जुड़ा हुआ है। ग्रामीण क्षेत्र में लोग घर के द्वार पर नीम की डालियाँ लगाते हैं, ताकि रोगों से रक्षा हो सके। कई स्थानों पर स्थानीय वैद्य जड़ी-बूटियों से उपचार करते हैं और लोग प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हैं।

हरेली के दिन बच्चे गेड़ी पर चढ़कर नाचते हैं। गाँवों में चारों ओर खुशहाली का वातावरण रहता है। इस दिन घरों में स्वादिष्ट भोजन बनाया जाता है। सब लोग मिल-जुलकर इस पर्व को मनाते हैं। हरेली हमें प्रकृति, पशु और खेती के महत्त्व को समझाती है। यह छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक वैभव का प्रतीक है। हरेली छत्तीसगढ़ी लोकजीवन को पोषित करने वाला पर्व है।

पढ़ना मतलब बढ़ना

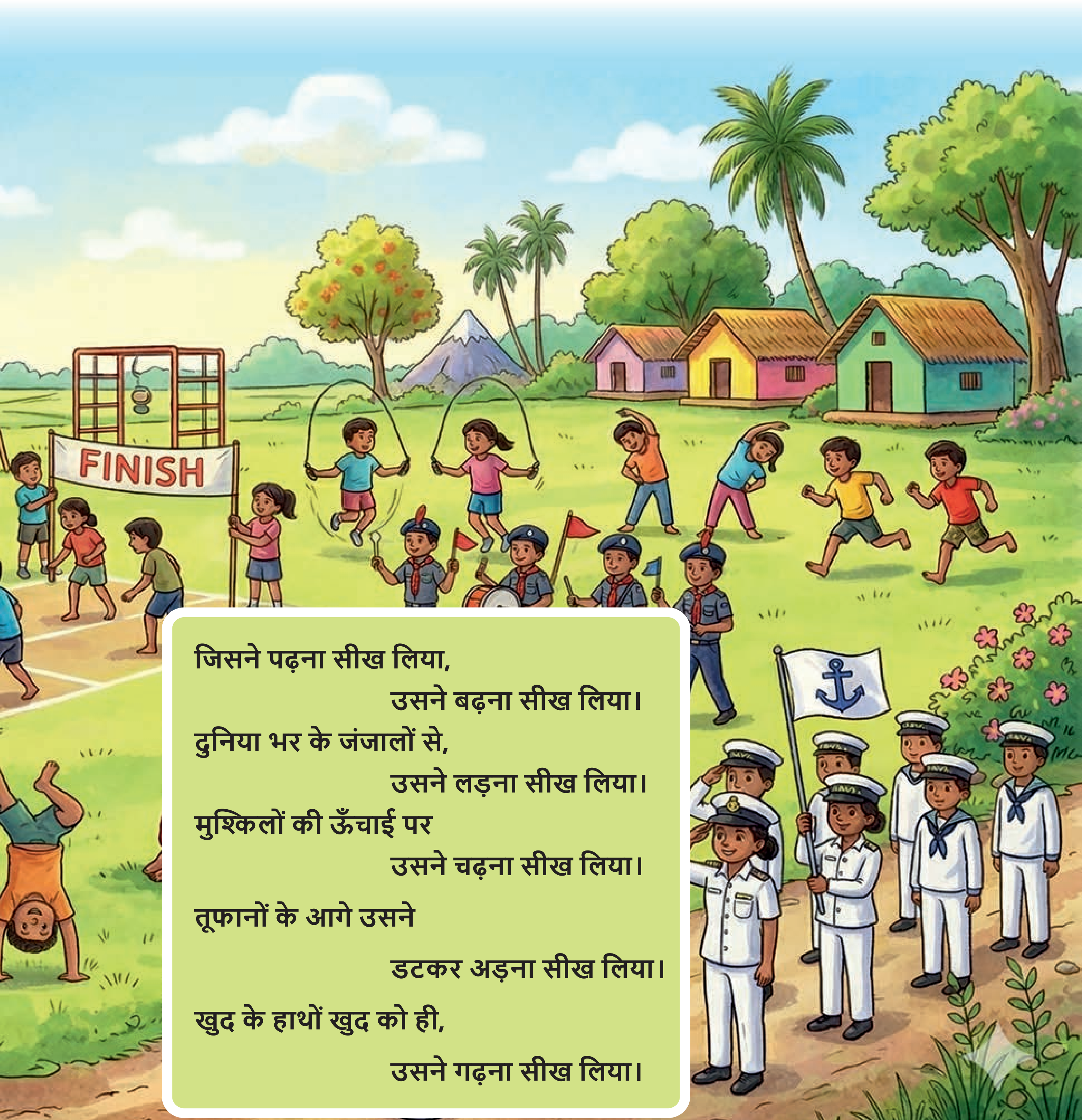

जिसने पढ़ना सीख लिया,
उसने बढ़ना सीख लिया।
दुनिया भर के जंजालों से,
उसने लड़ना सीख लिया।
मुश्किलों की ऊँचाई पर
उसने चढ़ना सीख लिया।
तूफानों के आगे उसने
डटकर अड़ना सीख लिया।
खुद के हाथों खुद को ही,
उसने गढ़ना सीख लिया।

हँसी-खेल में प्राण गँवाए

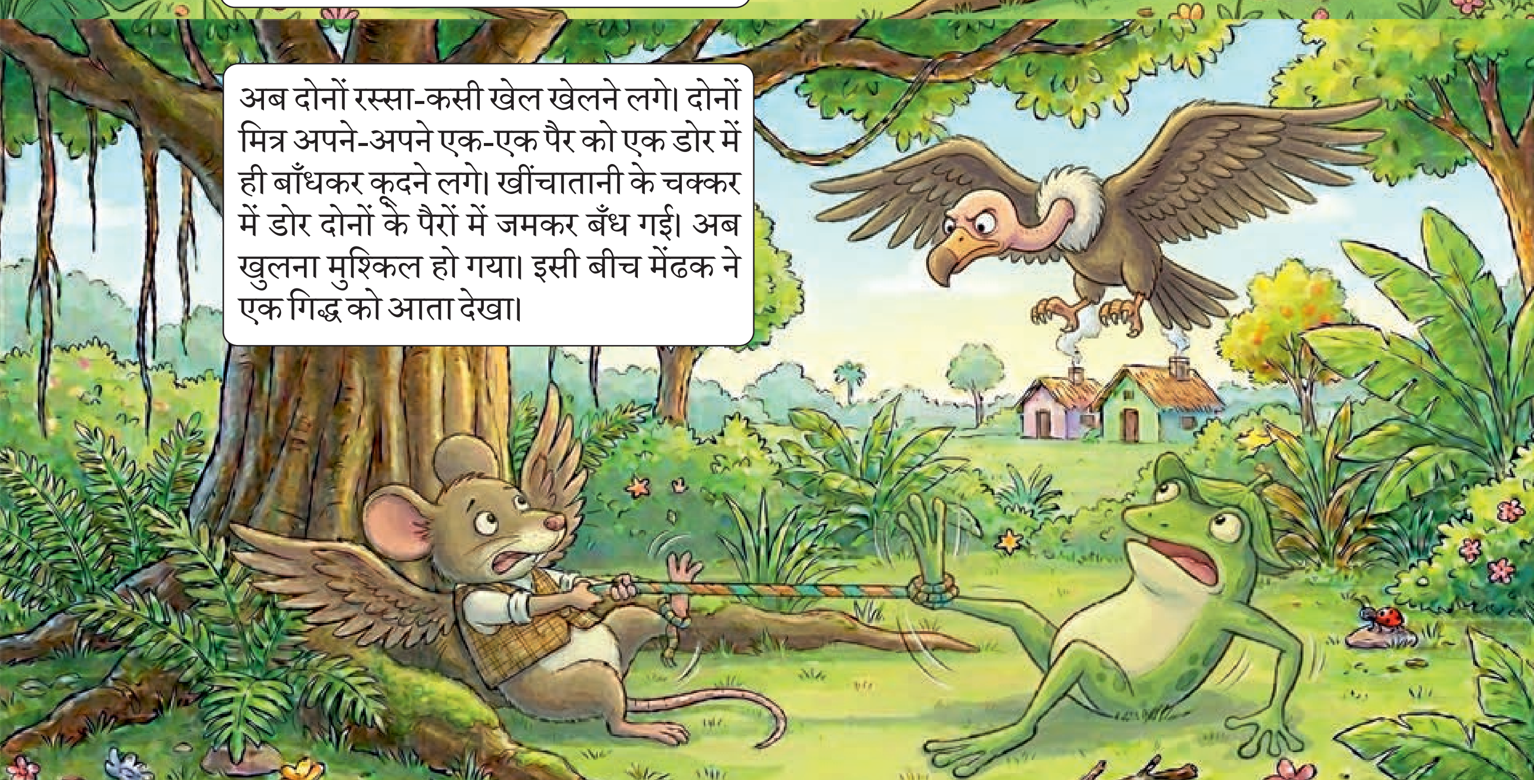

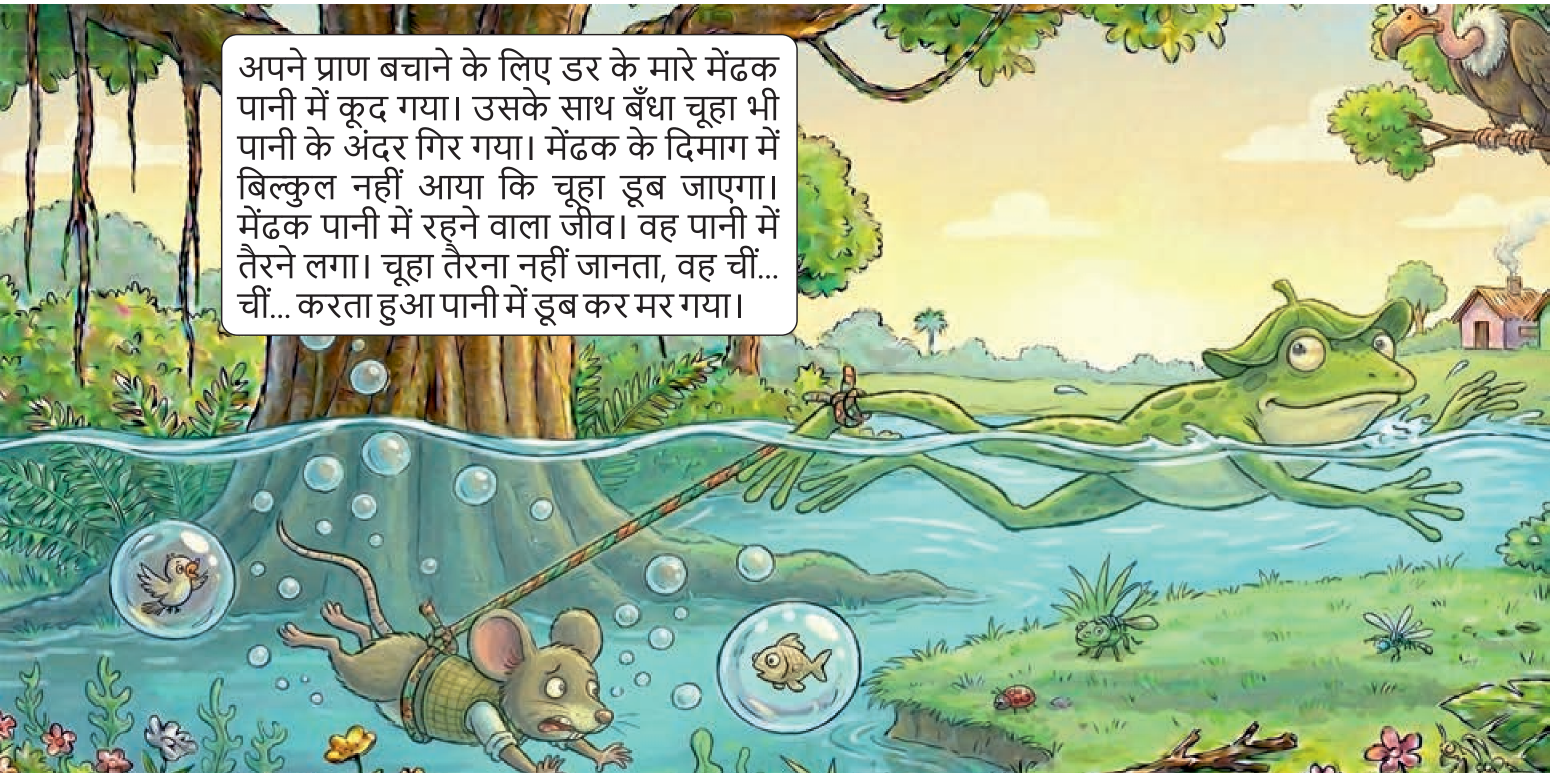
अपने प्राण बचाने के लिए डर के मारे मेंढक पानी में कूद गया। उसके साथ बँधा चूहा भी पानी के अंदर गिर गया। मेंढक के दिमाग में बिल्कुल नहीं आया कि चूहा डूब जाएगा। मेंढक पानी में रहने वाला जीव। वह पानी में तैरने लगा। चूहा तैरना नहीं जानता, वह चीं... चीं... करता हुआ पानी में डूब कर मर गया।

मरे हुए चूहे को गिद्ध ने देख लिया। उसने झपटकर चूहे को पकड़ लिया। गिद्ध ने चूहे को पकड़ा और उड़ गया। डोर में बँधा मेंढक भी चूहे के साथ लटकते हुए उड़ने लगे । गिद्ध मेंढक को देखकर खुश हो गया और उसने दोनों को खा लिया। इस तरह दोनों मित्रों ने हँसी-खेल में अपनी जान गँवा दी ।

ताल-तलैया बड़े काम के

छत्तीसगढ़ के एक गाँव अमृतपुर में बहुत पुराना एक तालाब था। इसी तालाब ने वर्षों से गाँव को पानी दिया था । अब वह तालाब बूढ़ा हो चला था । उसका पानी कम हो गया था । किनारों पर कचरा जमा था और कुछ लोगों ने तो उसके पास पक्के घर भी बना लिए थे ।

उसी गाँव में रामू का परिवार भी रहता था । रामू का पोता मोहन छठी कक्षा में पढ़ता था। वह एक समझदार बच्चा था। एक दिन वह अपनी दादी प्रेमवती के साथ तालाब के पास गया। मोहन ने पूछा, "दादी! यह तालाब इतना छोटा और गंदा क्यों है ?" दादी ने गहरी साँस ली और कहा, "बेटा! पहले हमारे गाँव में "छै आगर, छै कोरी तरिया" अर्थात् 126 तालाब थे। ऐसे गाँव को अच्छा भी माना जाता था। यह तालाब हमारे गाँव का सहारा था। बारिश का पानी यहीं जमा होता था। खेतों को पानी यहीं से मिलता था, लेकिन अब लोग इसे भूल गए हैं।"

कुछ दिनों बाद ज़ोरदार बारिश हुई। मोहन ने देखा कि बारिश का सारा पानी

सड़कों से बहकर बाहर चला गया। तालाब में बहुत कम पानी पहुँचा। मोहन सोच में पड़ गया कि यदि तालाब होता, तो सारा पानी उसमें भर जाता। विद्यालय में आज उसके अध्यापक ने पढ़ाया कि तालाब वर्षा-जल को रोकते हैं और भू-जल बढ़ाते हैं। अगर तालाब नहीं होंगे, तो पानी का संकट बढ़ जाएगा। मोहन को अपनी दादी और 'तालाब' की याद आ गई।

अगले दिन मोहन ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर गाँव की पंचायत से बात की । सबने मिलकर तय किया कि तालाब की सफाई करेंगे; तालाब में कचरा नहीं फेंकेंगे; उसके चारों ओर पौधे लगाएँगे; बारिश के पानी को तालाब की ओर मोड़ेंगे।

धीरे-धीरे गाँव के और लोग भी साथ आ गए। कुछ महीनों के बाद 'उस तालाब' में फिर से जल से भरने लगा। पानी साफ हो गया; पक्षी लौट आए; और खेतों में हरियाली छा गई। दादी ने मोहन के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "बेटा! आज तुमने तालाब को नहीं, पूरे गाँव के भविष्य को बचा लिया"। मोहन मुस्कराकर बोला " दादी, पानी बचाना मतलब जीवन बचाना। हमें हर गाँव के तालाबों का इसी तरह संरक्षण करना होगा।"

तालाब वर्षा जल का खज़ाना है। इनका संरक्षण हम सब की ज़िम्मेदारी है।

ताल-तलैया बड़े काम के, जल को रखते संचित।
नहीं बचे यदि ये सब तो हम, होंगे इससे वंचित।।

साथ निभाते दादा जी

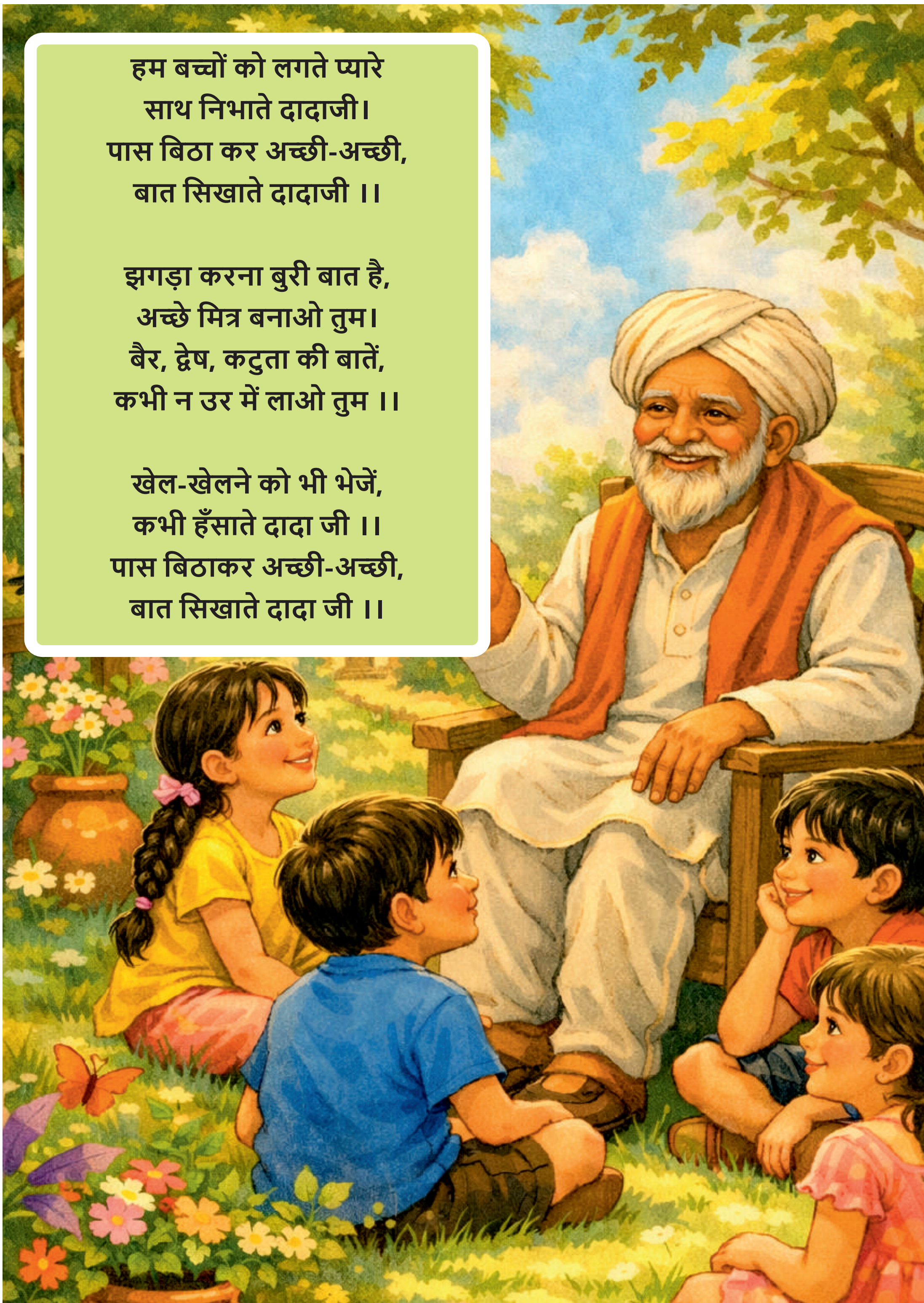

हम बच्चों को लगते प्यारे
साथ निभाते दादाजी।
पास बिठा कर अच्छी-अच्छी,
बात सिखाते दादाजी ।।

झगड़ा करना बुरी बात है,
अच्छे मित्र बनाओ तुम।
बैर, द्वेष, कटुता की बातें,
कभी न उर में लाओ तुम ।।

खेल-खेलने को भी भेजें,
कभी हँसाते दादा जी ।।
पास बिठाकर अच्छी-अच्छी,
बात सिखाते दादा जी ।।

गुरुओं का आदर करना है,
सभी बड़ों का मान करो।
जिसने तुम्हें दिया है जीवन,
उस ईश्वर का ध्यान करो।।

सच कहना है झूठ न कहना,
नित समझाते दादा जी ।
पास बिठा कर अच्छी-अच्छी,
बात सिखाते दादा जी ।।

मन से करो पढ़ाई अपनी,
तुमको आगे बढ़ना है ।
पद ऊँचा पाना है लेकिन,
लालच कभी न करना है ।।

सदा करो अभिमान देश पर,
मुझे बताते दादा जी ।।
पास बिठा कर अच्छी-अच्छी,
बात सिखाते दादा जी ।।

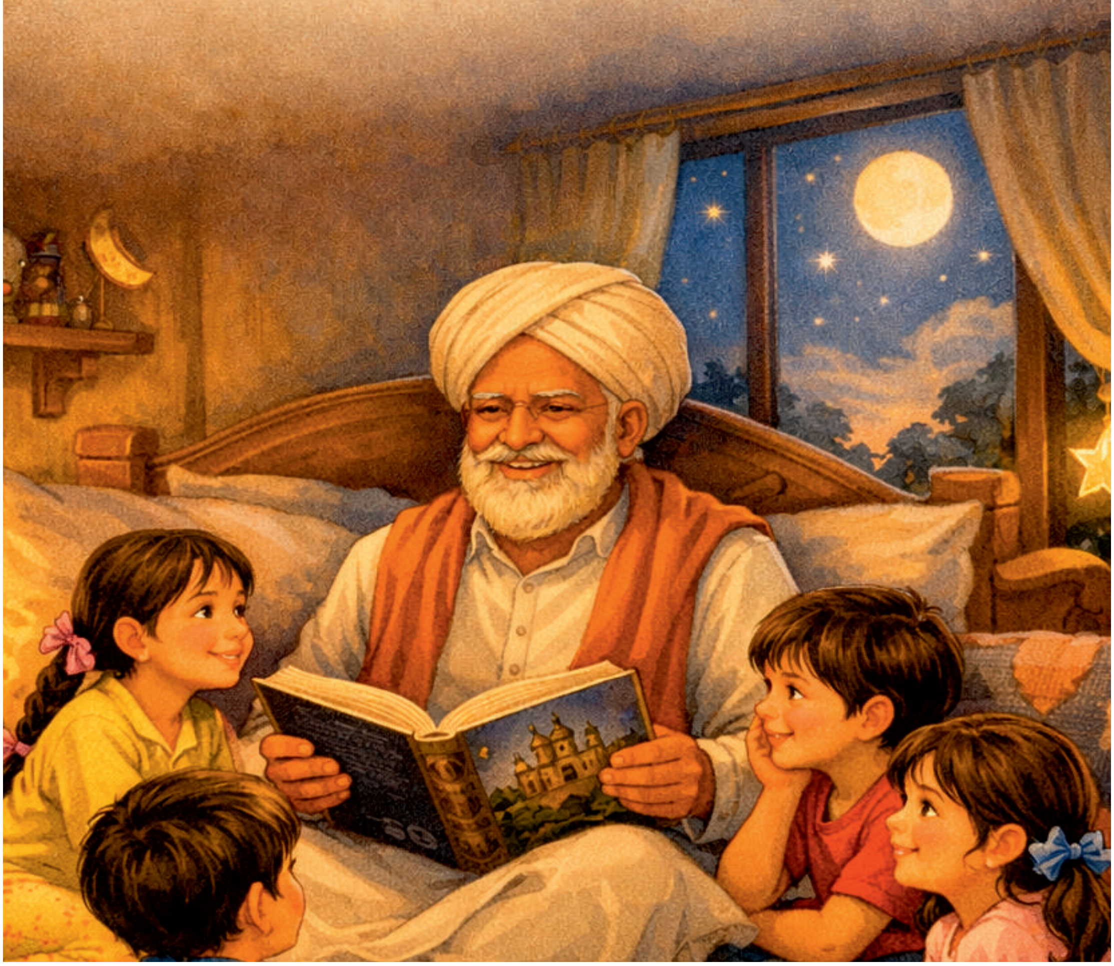

एक अनोखा तीर्थ – बानबरद

बानबरद छत्तीसगढ़ के दुर्ग ज़िले में अहिवारा के समीप स्थित एक प्राचीन और महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थल है, यह स्थान हिंदू आस्था के अनुसार गौ-हत्या के पाप से मुक्ति पाने के धाम के रूप में प्रसिद्ध है। बानबरद में एक प्राचीन विष्णु मंदिर है, जिसमें भगवान विष्णु की चतुर्भुजी प्रतिमा स्थापित है। इस मंदिर के समीप एक सीढ़ीदार पापमोचन कुंड (बावड़ी) भी है, जिसे बहुत पवित्र माना जाता है। मान्यता है कि यहाँ विधि-विधान से पूजा-अर्चन करने और कुंड में स्नान करने से गौ-हत्या के पाप से मुक्ति मिल जाती है।

स्थानीय मान्यताओं के अनुसार द्वापर युग में राक्षस बाणासुर ने भगवान कृष्ण के साथ युद्ध करते समय गौ-हत्या कर दी थी। इस महापाप से मुक्ति पाने के लिए उसे भगवान कृष्ण ने बानबरद में तपस्या करने और कुंड में स्नान करने के लिए कहा था।

यहाँ माघ मास की पूर्णिमा तिथि को एक विशाल मेला लगता है, जिसमें हज़ारों श्रद्धालु आते हैं। गौ-हत्या के पाप से मुक्ति प्रदान करने के कारण यह तीर्थ अपने आप में अनोखा है।

तरकीब काम आई

एक छोटे-से गाँव में रहने वाले एक मुर्ग़े को अपनी आवाज़ पर बड़ा नाज़ था। एक दिन एक चालाक लोमड़ी उसके पास आई और बोली, "मुर्ग़े महाशय! सुना है आपकी आवाज़ बड़ी प्यारी और बुलंद है।"

मुर्ग़े ने गद गद होकर अपनी आँखें मीचीं और ऊँची आवाज़ में चिल्लाया, "कु कु डू-कूँ-कुकुडू-कूँ...।" पर तभी लोमड़ी ने फुर्ती से उसे अपने मुँह में दबोच लिया और जंगल की तरफ भाग चली।

गाँववालों की नज़र उस पर पड़ी तो वे चिल्लाए, "पकड़ो, मारो, यह तो हमारा मुर्ग़ा दबोचे लिए जा रही है।"

लोमड़ी ने उनकी चिल्लाहट पर ध्यान नहीं दिया। मुर्ग़े के दिमाग़ में तुंरत ही एक उपाय आया। "लोमड़ी ने उससे कहा, "बहिन! ये गाँववाले चिल्ला रहे हैं कि आप मेरा मुर्ग़ा दबोचे लिए जा रही हैं। आप इन्हें जवाब क्यों नहीं दे देतीं कि यह मुर्ग़ा आपका है, उनका नहीं?"

लोमड़ी को मुर्ग़े की बात जँच गई। उसने फौरन मुँह खोला और गाँववालों की ओर देखकर कहा, "भूल जाओ अपने मुर्ग़े को। यह तो अब मेरा निवाला है।" यह कहने के लिए जैसे ही लोमड़ी का मुँह खुला, मुर्ग़ा उसके मुँह से छूट गया। वह सरपट भागा और अपने गाँववालों के पास पहुँच गया। मुर्ग़े ने कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य से काम लिया।

फुगड़ी

छत्तीसगढ़ लोक-खेलों का प्रदेश है। यहाँ की संस्कृति में सैकड़ों लोक-खेल प्रचलित हैं। यहाँ बालिकाओं के लिए मनोरंजन का एक साधन खेल है, जो उन्हें सहज ही उपलब्ध हो जाता है।

फुगड़ी छत्तीसगढ़ के ग्राम्य जीवन का खेल है। यह व्यक्तिगत अर्थात् एकल लोक-खेल है। जिसे समूह में खेला जाता है। इसमें किसी तरह की सामग्री नहीं होती है और न ही लंबे- चौड़े मैदान की आवश्यकता होती है। फुगड़ी का खेल घर के अंदर, आँगन या बरामदे में खेला जाता है। इस खेल को खेलने का तरीक़ा बहुत सहज होता है। सभी खिलाड़ी समूह में घेरा बनाकर उकड़ूँ बैठ जाते हैं। हथेली को ज़मीन से टिकाकर रखते हैं। जब खेल शुरू होता है, तब वे लगतार पैरों को लोच के साथ आगे-पीछे फिसलाते हैं जो अधिक समय तक इस क्रिया को कर लेती है, वह विजयी होती है।

इस खेल के साथ गीत गाने की भी परंपरा है।

प्रचलित गीत इस प्रकार है :-

गोबर दे बछरू गोबर दे, चारों खूँट ला लीपन दे
चारों देरानी ल बइठन दे,
अपन खाथे गूदा-गूदा ।
हमला दे थे बीजा ।
ये बीजा ला का करबो,
रहि जाबो तीजा ।
तीजा के बिहान दिन, घरी-घरी लुगरा,
चींव,चींव- करे मंजूर के पिला,
हेर दे भउजी कपाट के खीला ।
एक गोड़ मा लाल भाजी, एक गोड़ मा कपूर ।
कतेक ला मानवँ मैं देवर ससुर ।
फुगड़ी फू रे, फुगड़ी फू......

छत्तीसगढ़ में बहुत-से और पारंपरिक लोक खेल हैं, जैसे-मटकी-फोर, बाँटी, ईब्भा, भौंरा, बिल्लस, फोदा, गोटा, उलानबाँटी, नौगाटिया, डंडा पचरंगा, पिट्‌ठुल आदि। अलग-अलग क्षेत्रों में इन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है ।

सच्चरित्र जवान – चंद्रशेखर

उन दिनों प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी चंद्रशेखर आजाद झाँसी में थे। वहाँ बुंदेलखंड कंपनी में मोटर चलाना सीख रहे थे। क्रांतिकारी कार्यों में वे लगे ही रहते थे। स्थिति यह थी कि उन्हें चने खाकर समय व्यतीत करना पड़ता था। एक दिन चंद्रशेखर के पास इकन्नी (रुपये का सोलहवाँ भाग) बची थी। उन्होंने दिनभर कुछ भी नहीं खाया था। साँझ हुई, तो उन्हें जोरों की भूख लगी थी। चंद्रशेखर आजाद इकन्नी के भुने हुए चने ले आए। वे चने खा ही रहे थे कि चनों में से एक इकन्नी निकल आई। वाह ! इससे कल का काम भी चल जाएगा; परसों की चिंता फिर करेंगे। तभी वे गंभीर हो गए। सोचने लगे कि यह इकन्नी मेरी कैसे हो सकती है ? लगता है यह भूल से चली आई है। चने खाकर चंद्रशेखर ने एक लोटा पानी पी लिया। फिर वे भड़भूजे के पास जाकर बोले- "क्यों भाई, तुमने मुझे एक आने के चने दिए और साथ में एक इकन्नी भी डाल दी। ऐसा करोगे तो क्या कमाओगे ?" भड़भूजा जब तक कुछ समझे और उत्तर दे, आजाद उसे इकन्नी देकर लौट चले। गरीब भड़भूजा कभी वापस की गई इकन्नी को देखता था, तो कभी सड़क पर जाते उस युवक को। मन ही मन वह सत्यनिष्ठ जवान की प्रशंसा कर रहा था। आजाद इस संसार की भीड़ चीरते पता नहीं कहाँ चले गए, परंतु उन्होंने सदाचार की छाप हम सब के हृदयों में अंकित कर दी।

नींव के पत्थर

लाल बहादुर शास्त्री देश के दूसरे प्रधानमंत्री थे । वे बहुत संकोची स्वभाव के थे । जब वे लोक-सेवा-मंडल के अध्यक्ष बने, तब वे नहीं चाहते थे कि उनका नाम समाचार पत्रों में छपे और लोग उनकी प्रशंसा करें। एक दिन शास्त्री जी के कुछ मित्र उनसे मिलने आए । बातचीत में वे पूछ बैठे-"शास्त्री जी! आप समाचार-पत्रों से इतना परहेज क्यों करते हैं? आप अपना नाम पत्रों में छपवाने के इच्छुक क्यों नहीं रहते ?"

शास्त्री जी गंभीर हो गए । कुछ देर सोचकर बोले- "लाला लाजपतराय ने लोक-सेवा-मंडल के कार्य की दीक्षा देते हुए कहा था- "लाल बहादुर ! ताजमहल में दो प्रकार के पत्थर लगे हैं। एक बढ़िया संगमरमर (स्फटिक) के पत्थर, जिनको सारा संसार आकर देखता है और उनकी प्रशंसा होती है। दूसरे वे पत्थर हैं, जो ताजमहल की नींव में हैं, जिनके जीवन में अंधेरा ही अंधेरा है, किन्तु ताजमहल उन्हीं पर खड़ा है।" लाला जी के शब्द मुझे हर समय स्मरण रहते हैं। मैं नींव का पत्थर ही बना रहना चाहता हूँ।"

निश्चय ही निःस्वार्थ सेवी महान् आत्मा यही गुनगुनाते हैं :

वृत्त-पत्र में नाम छपेगा, पहनूँगा सुमनों का हार,
छोड़ चलो यह क्षुद्र भावना, बनो राष्ट्र के तारनहार।

गौरैया

सुबह-सुबह आने वाली
आकर हमें जगाने वाली
चूँ-चूँ गीत सुनाने वाली
लगती है प्यारी गौरैया।

चुन-चुन दाना खाने वाली
फुर्र-फुर्र उड़ जाने वाली
आँगन में आ जाती है वह
नन्ही - सी प्यारी गौरैया।

धूल नहा, ललचाने वाली
काले मेघ बुलाने वाली
बच्चों-सी नटखट लगती
मन भाती प्यारी गौरैया।

शबरी के बेर

शबरी एक साधारण वनवासी महिला थीं । वे जंगल में रहती थीं और बहुत ही साधारण जीवन जीती थीं । बचपन से ही उनका मन भगवान की भक्ति में लगता था । उन्होंने अपने गुरु मतंग ऋषि की बड़ी सेवा की । गुरु ने उनसे कहा था कि एक दिन भगवान राम उनसे मिलने आएँगे । तब से शबरी भगवान राम की प्रतीक्षा करने लगीं ।

हर सुबह शबरी अपने छोटे से आश्रम को साफ करती, रास्ते से काँटे हटाती और सोचती कि कहीं भगवान राम आएँ तो उन्हें कोई परेशानी न हो । वे जंगल से मीठे-मीठे बेर तोड़कर लातीं और उन्हें चखकर रखती, ताकि भगवान को सिर्फ मीठे बेर ही मिले ।

माता सीता को खोजते हुए एक दिन सच में भगवान राम और लक्ष्मण शबरी के आश्रम में पहुँचे। शबरी बहुत खुश हुई। उन्होंने भगवान राम का आदर किया और उन्हें बेर खिलाए । वे हर बेर को पहले खुद चखतीं, फिर राम को देती। यह देखकर भगवान राम बहुत प्रसन्न हुए क्योंकि वे उन्हें प्रेम-पूर्वक बेर खिला रही थीं।

भगवान राम ने शबरी की भक्ति की बहुत प्रशंसा की। वे मानते थे कि सच्चा प्रेम और भक्ति ही सबसे बड़ी चीज है। उनकी दृष्टि में सब मनुष्य समान थे। भगवान राम ने शबरी की भक्ति से प्रसन्न होकर, उन्हें भक्ति के चरम ज्ञान 'नवधा भक्ति' का उपदेश दिया। यह भक्ति के नौ सरल और श्रेष्ठ मार्ग हैं, जो हर व्यक्ति के जीवन को पवित्र बना सकते हैं। छत्तीसगढ़ में माता शबरी को महान भक्त के रूप में आदरपूर्वक स्मरण किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में रामायण मंडलियों, मानस गान और भजन कार्यक्रमों के माध्यम से 'नवधा भक्ति' का संदेश आज भी लोगों तक पहुँचता है।

नोट्स

नोट्स